



मक्का फसल

बेहतर फसल उत्पादन पद्धति

मक्का – एक परिचय

भारत में मक्का की फसल चावल और गेहूँ के बाद तीसरी सबसे महत्वपूर्ण खाद्य फसल है। यह खरीफ की फसल है लेकिन आज कल यह लगभग हर मौसम में बोया जा रहा है। यह मोटे अनाज की श्रेणी में आता है। मक्का सेहत का खजाना है। इसमें पाया जाने वाला कैरेटीनाएड विटामिन-ए का अच्छा स्रोत है जो कि आँखों के लिये बहुत फायदेमन्द है। यह उर्जा का भी एक अच्छा स्रोत है। यह एक बहु-उपयोगी फसल है और मनुष्य व पशुओं के भोजन के साथ-साथ यह विभिन्न उद्योगों में भी इस्तेमाल होता है। भोजन में इसका उपयोग रोटी के अलावा विभिन्न नाश्ते के व्यंजन जैसे पॉप कॉर्न, मठरी आदि के रूप में होता है।

इंसान व जानवरों के लिए गुणवत्तापूर्ण भोजन के अलावा, मक्का एक बुनियादी कच्चे माल के रूप में औद्योगिक उत्पादों जैसे स्टार्च, तेल, प्रोटीन, मादक पेय, गोंद, और कागज उद्योग आदि में भी काम आता है।

मुख्य मक्का उत्पादक राज्य आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, राजस्थान, महाराष्ट्र, बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश आदि हैं। भारत में वर्ष 2012-13 में मक्का लगभग 87 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में लगी और उत्पादन लगभग 222 लाख टन हुआ वहीं मध्य प्रदेश में वर्ष 2012-13 में मक्का लगभग 8 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में लगी और उत्पादन लगभग 25 लाख टन हुआ।

मक्का की खेती के लिए उपयुक्त भूमि कैसी हो?

मक्का के उत्पादन के लिये मध्यम से भारी भूमि जिसमें जल निकास अच्छा हो, सबसे उपयुक्त होती है। खेत की तैयारी के लिये एक या दो बार हल से जुताई करें तथा बाद में दो बार बखर चलाकर मिट्टी को अच्छी तरह भुरभुरी बना लेना चाहिये। जिन क्षेत्रों में भूमिगत कीटों या सफेद भृंग (White Grub) का प्रकोप प्रायः होता है, वहाँ अंतिम बखरनी के समय 2 प्रतिशत फालीडाल डस्ट 8 से 10 किलो. प्रति एकड़ की दर से भुरकाव करना चाहिये।

मक्का की उन्नत जातियों का चयन कैसे करें ?

क्षेत्र की उपयुक्तता के अनुसार मक्का की उन्नत जातियों का चुनाव करना चाहिये। मक्का की उन्नत जातियाँ निम्नानुसार हैं—

संकर जातियाँ —

1. गंगा-5ए सिन्जेन्टा 6240— इसके पौधे मजबूत भुट्टा शंकु आकार तथा दानों का रंग पीला होता है। यह 105-110 दिनों की अवधि में पक कर तैयार हो जाती है। इसकी औसत पैदावार 20 से 26 क्विंटल प्रति एकड़ होती है।
2. गंगा सफेद 2— इसके दाने सफेद होते हैं। यह जाति मध्य प्रदेश के पश्चिमी जिलों के लिये उपयुक्त है। यह जाति 105-110 दिनों में पकती है एवं इसकी पैदावार 20 से 26 क्विंटल प्रति एकड़ होती है।
3. डेक्कन 101— इसके पौधे ऊँचे, भुट्टे मध्यम आकार के एवं दानों का रंग पीला होता है। यह जाति 110-115 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसकी पैदावार 24 से 26 क्विंटल प्रति एकड़ होती है।

मक्का की कम्पोजिट जातियाँ (संकुल)

1. पूसा कम्पोजिट 1— यह मक्का की जल्दी पकने वाली जाति है जो 80 से 85 दिनों में पक जाती है। इसका दाना चपटा होता है एवं इसकी औसत पैदावार 12— 14 क्विंटल प्रति एकड़ होती है।
2. पूसा कम्पोजिट 11— यह 90—95 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसका दाना तथा आकार चपटा होता है। इसका उत्पादन 14 से 16 क्विंटल प्रति एकड़ होता है।
3. नवजोत— यह जाति 90—95 दिनों में पकती है एवं इसका औसत उत्पादन 14 —16 क्विंटल प्रति एकड़ होता है। इसके भुट्टे मध्यम आकार के तथा दानों का रंग नारंगी होता है। इसके दाने चपटे आकार के होते हैं। देसी किस्मों की तुलना में यह अधिक बीमारी रोधक जाति है।
4. चंदन मक्का 3— इसके पौधे मजबूत एवं इसकी पत्तियों का रंग काला होता है। यह 100—105 दिनों में पक जाती है। इसकी औसत पैदावार 24 से 26 क्विंटल प्रति एकड़ होती है।

सूर्या एवं जवाहर मक्का — ये जातियाँ 90— 95 दिनों में पक कर तैयार हो जाती हैं एवं इनकी औसत उपज 14—16 क्विंटल प्रति एकड़ होती है। इनका दाना पीला एवं आकार में कुछ चपटा होता है।

मक्का की फसल की बीज दर क्या होनी चाहिए?

मक्का का बीज छोटे या बड़े दानों के आकार के अनुसार लगता है जो प्रायः 6 से 7 किलो प्रति एकड़ की दर से बोया जाता है।

विश्वसनीय बीज कहाँ कहाँ मिल सकता है ?

- जिले की सभी बीज सोसायटी पर।
- संकर किस्मों हेतु विश्वसनीय आदान विक्रेताओं से

मक्का बोने का समय कब एवं तरीका कैसा होना चाहिए ?

मक्का की फसल वर्षा होने पर बोई जाती है। यदि कृषकों के पास सिंचाई का साधन हो तो 10—15 दिन पूर्व में बुआई करने से इसकी अधिक पैदावार मिलती है। किस्म के हिसाब से बुआई में कतार से कतार की दूरी 75 से.मी. एवं पौधों से पौधों की दूरी 20—30 से.मी रखनी चाहीये। मक्का का बीज 3 से 5 से.मी. गहराई पर बोने से अंकुरण अच्छा होता है। इसे अधिक गहरा नहीं बोना चाहिए वरना मक्का के बीज का अंकुरण कम होता है।



मक्का फसल की विभिन्न अवस्थायें

मक्का फसल में जैविक खाद उपयोग करने का तरीका कैसा होना चाहिए ?

मक्का की फसल में शीघ्र पकने वाली जातियों में नाडेप कम्पोस्ट 6 से 8 टन या वर्मी कम्पोस्ट 3.5–4 टन प्रति एकड़ तथा देर से पकने वाली जातियों में 8–10 टन नाडेप कम्पोस्ट या 4 से 5 टन वर्मी कम्पोस्ट प्रति एकड़ देने से मक्का का भरपूर उत्पादन मिलता है। इसके साथ ही पी.एस.बी. कल्चर 800 किलो ग्राम प्रति एकड़ डालना चाहिए जिससे फसल को अधुलनशील फास्फोरस उपलब्ध हो सके।

मक्का फसल में रासायनिक खाद का उपयोग करने का तरीका कैसा होना चाहिए ?

मक्का में रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग वैसे तो मिट्टी परीक्षण के आधार पर करना चाहिये किन्तु सामान्यतः संकर जातियों के लिये 48 नत्रजन 20 स्फुर तथा 16 किलो पोटाष प्रति एकड़ तथा देर से पकने वाली जातियों के लिये 40 नत्रजन, 16 स्फुर तथा 12 किलो पोटाष प्रति एकड़ देना चाहिये। भारी भूमि में नत्रजन की 1/3 मात्रा बुआई के समय एवं शेष 2/3 मात्रा लगभग एक माह की फसल होने पर देना चाहिये। फास्फोरस एवं पोटाष की पूर्ण मात्रा बुआई के समय या पूर्व में देना चाहिये। हल्की भूमि में शेष 2/3 मात्रा दो बार में, जब पौधा 60 से.मी. हो या 30 दिन के एवं मांझर निकलते समय देना चाहिये। यदि मिट्टी परीक्षण के आधार पर भूमि में जिंक की कमी पाई जावे तो भारी भूमि में 20 किलो तथा हल्की भूमि में 10 किलो प्रति एकड़ की दर से जिंक सल्फेट डालना चाहिये।

किसानों की सुविधा के लिये जमीन के विभिन्न ईकाइयाँ नीचे दी गई हैं।

$$\text{एक हेक्टेयर} = 2.5 \text{ एकड़} = 5 \text{ बीघा}$$

मक्का फसल में सिंचाई कब करनी चाहिए ?

मक्का फसल मुख्यत खरीफ मौसम में बोई जाती है परन्तु रबी मौसम में भी मक्का को बोया जाता है। मक्का में सिंचाई की मुख्यतः दो क्रांतिक अवस्था जैसे टैसलिंग एवं सिल्लिंग (गाब व भुट्टा) निकलने की अवस्था में करना अति आवश्यक है। रबी मक्का में मुख्यतः 4–5 सिंचाई की जरूरत होती है। अगर खरीफ मौसम में बरसात नहीं हो तो टैसलिंग एवं सिल्लिंग (गाब व भुट्टा) निकलने की अवस्था में सिंचाई करना आवश्यक है। मक्का को हमेशा कतार में बोना चाहिए ताकि पानी भराव की स्थिति न बने क्योंकि मक्का पानी भराव की स्थिति में अच्छे से वृद्धि नहीं कर पाती है।

मक्का फसल में खरपतवार नियंत्रण कैसे करें ?

बोनी के 15–20 दिन बाद कतारों के बीच में डोरा चलाते हैं जिसमें निंदाई एवं गुड़ाई दोनों ही होते हैं। बोअनी के 30 दिनों बाद जब पौधे 60 से.मी. ऊँचे हो तब मिट्टी चढ़ाना चाहिए। मांझर निकलते समय यदि वर्षा न हो तथा सिंचाई करने की सुविधा हो, तो उस समय कृषकों को पानी देना चाहिए। खेत में पानी का निकास अवष्य



होना चाहिए क्योंकि एक ही स्थान पर पानी जमा होने से फसल की बढ़वार रुकती है एवं पैदावार में कमी आती है। अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में मक्का की बुआई मेंढों पर करना चाहिए। मक्का की फसल के बुआई के तुरन्त बाद या अंकुरण होने के पूर्व भूमि में नमी होने पर एलाक्लोर 600 ग्राम या एट्राजीन 400 ग्राम प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करना चाहिये। इससे चौड़ी पत्ती एवं घास कुल के प्रमुख निदाओं का नियंत्रण होगा।

मक्का फसल में पौध संरक्षण कैसे करें ?

जैविक कीट नियंत्रण:

मक्का की फसल में तनाछेदक इल्ली, कम्बल कीड़ा अर्मीवर्म, ग्रास जेसिड एवं एफिडस आदि का नियंत्रण जैविक कीट नियंत्रण द्वारा सफलपूर्वक निम्नानुसार तरीकों से किया जा सकता है –

- हेलिकोवरपा एन.पी.व्ही. 100 एम. एल. घोल का प्रति एकड़ छिड़काव करें।
- तना छेदक हेतु ट्राइकोग्रामा चिलोनिस के 30,000 अण्डे प्रति एकड़ प्रति सप्ताह की दर से फसल में छोड़े।
- एपेन्टालिस, ट्रायकोग्रामा, लेडी बर्ड बीटल इत्यादि मित्र कीटों का संरक्षण करें।

रासायनिक कीट नियंत्रण

(1)	व्हाइट ग्रब	इसकी इल्लियों पौधे की जड़ों को काटती हैं। रोकथाम: कार्बोरिल 10 प्रतिषत डस्ट या फालीडाल डस्ट या थिमेट 10 जी का (4 कि.ग्रा./एकड़) दर से जुताई के पूर्व भुरकाव कर, फिर जुताई करें।
(2)	तना छेदक इल्ली	इसकी इल्लियों कोमल पत्तों को खाकर तने में घुस जाती हैं जिससे पौधों के बीच का भाग सूख जाता है। रोकथाम: इसकी रोकथाम के लिये क्विनालफास 25 ई सी. 400 मि.ली को 200 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ छिड़काव करें या थिमेट 10 जी या कार्बोफ्यूरोन 4 जी 4-6 दाने प्रति पोंगली के हिसाब से पौधों की पोंगलियों में डालें। इसके अलावा कम्बल कीड़ा, ग्रास हॉपर, अर्मीवर्म, जेसिड एफिडस आदि का नियंत्रण इमिडाक्लोप्रिड 17.8 ई.सी. 100 मि.ली. को 200 लीटर में मिलाकर प्रति एकड़ छिड़काव करें या इकालक्स डस्ट 1.5 प्रतिषत को 8 किलो प्रति एकड़ की दर से भुरकाव करें।
(3)	लीफ स्पट	इस बीमारी में लम्बे, गहरे भूरे रंग के धब्बे होते हैं। इन धब्बों के ज्यादा होने पर पत्तियाँ सूख जाती हैं। रोकथाम: इसकी रोकथाम के लिये डाइथेन जेड – 78 की 280 से 320 ग्राम 150-180 लिटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ में छिड़काव करें।



मक्का फसल की कटाई गहाई एवं भण्डारण में क्या सावधानी रखे?

जब भुट्टे अच्छी तरह पककर सूख जावें तो फसल काट लेना चाहिये। भुट्टो के ऊपर के पत्ते हाथ से निकालते हैं एवं भुट्टो को साफ पल्ली में रख कर धूप में सुखाते हैं। बाद में भुट्टो के दाने मेज शेलर या हंसिया से निकालते हैं। जब दानों में 10 से 12 प्रतिशत आर्द्रता रहे तब इसका भण्डारण करना चाहिये। 10 से 12 प्रतिशत आर्द्रता का मतलब जब भुट्टे में दानो को दबाने पर दबे नहीं एवं जब दानो को तोड़े तो कट करके आवाज आये तो समझ जाये की अब मक्का भण्डारण के लिए उपयुक्त है। जैविक रूप से भण्डारण में नीम की पत्तियाँ मिलाकर रख सकते हैं ताकि घुन ना लगे।

मक्का फसल में कीट नियंत्रण की अन्य कौन कौन सी विधियाँ हैं?

प्रकाश प्रपंच द्वारा नियंत्रण

स्वभावतः फली भेदक तना छेदक एवं अन्य प्रकार की सूड़ियों के प्रौढ़ प्रकाश की ओर आकर्षित होते हैं। इनकी इसी आदत का लाभ प्रकाश जाल से उठाते हैं। प्रकाश जाल तरह – तरह के आकार के और विभिन्न प्रकाश माध्यम के होते हैं। इसमें नर और मादा वयस्क एकत्रित हो जाते हैं। सामान्यतया प्रकाश प्रपंच के नीचे मिट्टी के तेल मिला पानी एक बर्तन में रखा जाता है जिसमें फँसकर कीट मर जाते हैं।

फेरोमोन (यौन रसायन प्रपंच द्वारा कीट नियंत्रण)

इसमें मादा पतियों के यौन स्त्राव रसायन की गंध से मिलता जुलता संस्त्रशित रसायन प्रयोग करते हैं जो नर पतंगों को संभोग करने हेतु आकर्षित करता है जिससे उस क्षेत्र के नर भ्रमवश यह समझकर कि जाल के अन्दर मादा वयस्क है आकर्षित होकर एकत्रित हो जाते हैं। इस प्रकार नर पतंगो की जाल में उपस्थिति से कीटों के खेत में अण्डा देने के स्थिति का पूर्वज्ञान हो जाता है जिससे उपयुक्त कीट प्रबन्धन प्रणाली अपनाई जा सकती है। यौन रसायन आकर्षण जाल के दो मुख्य अंग हैं—

- (क) **जाल ट्रैप:** यह एक टिन अथवा प्लास्टिक का होता है जिसे डण्डे से बाँधकर फसल में 2 फीट की ऊँचाई पर खेत में लगा देते हैं। इसमें नीचे पॉलीथीन का थैला लगा रहता है जिसमें नर पतंगे एकत्र होते रहते हैं।
- (ख) **यौन रसायन संतृप्त गुटका (फेरोमोन सेप्टा):** मादा पतंगा, नर पतंगा को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए यौनांगो से एक विशेष प्रकार की गंध छोडती है जिससे नर पतंगा मादा पतंगा की ओर आकर्षित होकर प्रजनन क्रिया को सम्पन्न करते हैं। इस प्राकृतिक जैव रसायन से मिलता – जुलता कृत्रिम रसायन तैयार किया जाता है। यह रसायन यौन आकर्षण जाल का प्रमुख अवयव है। इसको फेरोमोन ट्रैप के बीच गड्ढे में अथवा तार के फंदे में फँसाकर रख देते हैं। जिससे नर पतंगे आकर्षित होकर के नीचे पौलीथीन के थैले में इकट्ठा होते रहते हैं।



न्यूक्लियर पोलिहेड्रासिस वायरस (NPV)

यह एक प्राकृतिक रूप से मौजूद वायरस पर आधारित सुक्ष्म जैविक उत्पाद है। वे सुक्ष्मजीवी जो केवल न्यूक्लियक एसिड एवं प्रोटीन के बने होते हैं वायरस कहलाते हैं। एन.पी.वी. वायरस का आकार बहुकोणीय होता है। विषाणु का मुख्य लक्षण है कि यह परपोषी के अन्दर ही सक्रीय होते हैं अन्यथा निष्क्रिय पड़ा रहता है। यह कीट की प्रजाति विशेष के लिए कारगर होता है।

प्रयोग:

- कीट नियंत्रण के लिए प्रयुक्त इन वायरसों से प्रभावित पत्ती को खाने से सूंड़ी 4 से 7 दिन में मर जाती है।
- सर्वप्रथम संक्रमित सूंड़ी सुस्त हो जाती है खाना छोड़ देती है। सूंड़ी प्रथम सफेद रंग में परिवर्तित होती है ओर बाद में काले रंग में बदल कर लटक जाती है। इस जैविक उत्पाद को 250 एम. एल. / हैक्टेयर की दर से आवश्यक पानी में मिलाकर छिड़काव सुबह अथवा सांय को उस समय किया जाता है जब अण्डों से सूंड़ियाँ निकलने का समय हो। इसके घोल में 2 किलो गुड़ मिलाना उपयुक्त है।

ब्यूवेरिया बेसियान

यह प्रकृति में मौजूद सफेद रंग की मित्र फफूँद है। यह कीट की प्रारंभिक अवस्था एवं प्यूपावस्था को संक्रमित करता है। कीट कुछ दिनों में लकवा ग्रस्त होकर मर जाता है। मृत कीट सफेद रंग की ममी में तब्दील हो जाता है। इस मित्र फफूँद की उचित वृद्धि के लिए अधिक आर्द्रता की आवश्यकता होती है।

प्रयोग:

- ब्यूवेरिया बेसियान की 750 ग्राम मात्रा को जैविक कीटनाशक के साथ मिलाकर अथवा 1 किलोग्राम मात्रा को चिपको के साथ 200 ली. पानी में मिलाकर 1 एकड़ क्षेत्रफल में सुबह अथवा सांय के समय छिड़काव करना चाहिए। सफेद गिडार (WHITE GRUB) के नियंत्रण के लिए 180 ग्रा. दवा को 400 ली. पानी में घोलकर मिट्टी में ड्रेन्चिंग करे।

पंचगव्य

गोबर 7 कि. ग्रा., घी 1 कि.ग्रा. मिलाकर 3 दिन के लिये रख दे तथा 3 दिन पश्चात इसमें गाय का मूत्र एवं पानी प्रत्येक 10 ली. मिलाकर 15 दिन के लिये छोड़ दे एवं इसे निरंतर मिलाते रहे तथा 15 दिन पश्चात इसमें गाय का दूध 3 ली., दही 2 ली., गन्ने का रस 3 ली., आलू 2 किग्रा. व 3 कि.ग्रा. गुड़ मिलाकर आगे पंद्रह दिवस के लिये छोड़ देवे। कुल 30 दिवस में यह छिड़कने हेतु तैयार हो जावेगा इसका 3 प्रतिशत का घोल फसल की फूल अवस्था में छिड़काव करें।



भभूत अढृत पानी अढृत पानी तैयार करने के लिए 10 कि. ग्रा. गाय का ताजा गोबर 250 ग्राम घी 500 ग्राम शहद और 200 लीटर पानी की आवश्यकता होती है। सर्वप्रथम 200 लीटर के ड्रम में 10 किलोग्राम गाय का ताजा गोबर डाले उसमें 250 ग्राम नौनी घी 500 ग्राम शहद को डालकर अच्छी तरह मिलायें। इसके पश्चात ड्रम को पूरा पानी से भर ले तथा एक लकड़ी की सहायता से घोल तैयार करें। इस घोल को जब फसल 15 से 20 दिन की हो जावे तब कतार के बीच में 3 से 4 बार प्रयोग करें। इसके प्रयोग के समय मृदा में नमी का होना अति आवश्यक है।

गौमूत्र गौमूत्र कांच की शीशी में भरकर धूप में रख सकते हैं। जितना पूर्ण गौमूत्र होगा उतना अधिक असरकारी होगा। 12 – 15 मि.ली. गौमूत्र प्रति लीटर पानी में मिलाकर स्प्रेयर पंप से फसलों में बुआई के 15 दिन बाद प्रत्येक 10 दिवस में छिड़काव करने से फसलों में रोग एवं कीड़ों में प्रतिरोधी क्षमता विकसित होती है जिससे प्रकोप की संभावना कम रहती है।

नीम के उत्पाद	
नीम पत्ती का घोल	नीम की 10– 12 किलो पत्तियाँ 200 लीटर पानी में 4 दिन तक भिगोंये। पानी होने पर इसे छानकर एक एकड़ की फसल पर छिड़काव करने से इल्ली की रोकथाम होती है। इस औषधि की तीव्रता को बढ़ाने हेतु बेसरम, धतूरा, तम्बाकू आदि के पत्तों को मिलाकर काढ़ा बनाने से औषधि की तीव्रता बढ़ जाती है और दवा कई प्रकार के कीड़ों को नष्ट करने में उपयोगी सिद्ध है।
नीम की निबोली	नीम की निबोली 2 किलो लेकर महीन पीस लें। इसमें 2 लीटर पानी मिलाकर छिड़काव करें जिससे प्यूपा तथा भूमि जनित रोग विल्ट आदि के रोकथाम के लिये प्रयोग किया जा सकता है। 6–8 किंवटल प्रति एकड़ की दर से अंतिम बखरनी करते समय कूटकर बारीक खेत में मिलावे।
आइपोनिया (बेशरम) पत्ती घोल	आइपोमिया की 10 से 12 किलो पत्तियाँ 200 लीटर पानी में 4 दिन तक भिगोंयें। पत्तियाँ का अर्क उतरने पर इसे छानकर एक एकड़ की फसल पर छिड़काव करें इससे कीटों का नियंत्रण होता है।
मट्ठा खाद	गौमूत्र 10 लीटर, गोबर 10 किलो, गुड़ 500 ग्राम सभी को मिलाकर मटके में भरकर 10 दिन सड़ाये फिर 200 लीटर पानी में घोलकर गीली जमीन पर कतारों के बीच छिड़क दें। 15 दिन बाद पुनः इस का छिड़काव करें। मट्ठा, छाछ, मही, आदि नाम से जाना जाने वाला तत्व अनेक प्रकार से गुणकारी है और इसका उपयोग फसलों में कीट व्याधि के उपचार के लिये लाभप्रद है। 100–150 मि.ली. छाछ 15 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करने से कीट – व्याधि का नियंत्रण होता है।



मक्का फसल में ध्यान रखने वाली बातें

- ☞ मक्का फसल के लिये मध्यम से भारी भूमि जिसमें जल निकास अच्छा हो, सबसे उपयुक्त होती है।
- ☞ जिन क्षेत्रों में भूमिगत कीटो या सफेद भृंग (White Grub) का प्रकोप प्रायः होता है, वहाँ अंतिम बखरनी के समय 2 प्रतिषत फालीडाल डस्ट 8 से 10 किलो. प्रति एकड़ की दर से भुरकाव करना चाहिये।
- ☞ मक्का का बीज 3 से 5 से.मी. गहराई पर बोने से अंकुरण अच्छा होता है। इसे अधिक गहरा नहीं बोना चाहिये वरना मक्का के बीज का अंकुरण कम होता है।
- ☞ मक्का की फसल में शीघ्र पकने वाली जातियों में नाडेप कम्पोस्ट 6 से 8 टन या वर्मी कम्पोस्ट 3.5-4 टन प्रति एकड़ तथा देर से पकने वाली जातियों में 8-10 टन नाडेप कम्पोस्ट या 4 से 5.25 टन वर्मी कम्पोस्ट प्रति एकड़ देने से मक्का का भरपूर उत्पादन मिलता है।
- ☞ इसके साथ ही पी.एस.बी. कल्चर 800 किलो ग्राम प्रति एकड़ डालना चाहिए जिससे फसल को अघुलनशील फास्फोरस उपलब्ध हो सके।
- ☞ भारी भूमि में नत्रजन की 1/3 मात्रा बुआई के समय एवं शेष 2/3 मात्रा लगभग एक माह की फसल होने पर देना चाहिए। फास्फोरस एवं पोटैश की पूर्ण मात्रा बुआई के समय या पूर्व में देना चाहिये।
- ☞ हल्की भूमि में शेष 2/3 मात्रा दो बार में जब पौधा 60 से.मी. हो या 30 दिन के एवं मांझर निकलते समय देना चाहिये।
- ☞ मक्का की फसल के बुआई के तुरन्त बाद या अंकुरण होने के पूर्व भूमि में नमी होने पर एलाक्लोर 600 ग्राम या एट्राजीन 400 ग्राम प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करना चाहिये। इससे चौड़ी पत्ती एवं घास कुल के प्रमुख नींदाओ का नियंत्रण होगा।
- ☞ मांझर निकलते समय यदि वर्षा न हो तथा सिंचाई करने की सुविधा हो तो उस समय कृषको को पानी देना चाहीये।
- ☞ खेत में पानी का निकास अवष्य होना चाहिये क्योंकि एक ही स्थान पर पानी जमा होने से फसल की बढ़वार रूकती है एवं पैदावार में कमी आती है।
- ☞ जब दानों में 10 से 12 प्रतिषत आर्द्रता रहे तब इसका भण्डारण करना चाहिये। जैविक रूप से भण्डारण में नीम की पत्तियाँ मिलाकर रख सकते हैं।

अधिक जानकारी हेतु अपने क्षेत्र में कार्यरत डी.एस.सी. के फील्ड यूनिट से सम्पर्क करें।

मनावर 9407139343 | कुक्षी 9644523913 | नानपुर 9644523913 | देवास 9691430501

मुख्य स्रोत तथा तकनीकी परामर्श:

के.वी.के. धार,
जे.एन.के.वि.वि. जबलपुर,
फार्मर पोर्टल से प्राप्त सामग्री

निर्माण टीम:

मोहीत पाटीदार (एम एस सी अग्रीकल्चर)
अमीत त्रिपाठी (स्नातक-कृषि उद्यमिता प्रबंधन)
मोहन शर्मा (कृषि अभियन्ता)

वित्तीय सहायता: आरबीएस फाउन्डेशन ● रतन दोराबजी टाटा ट्रस्ट (आरडीटीटी)

dsc
Development
Support
Centre

डेवलपमेन्ट सपोर्ट सेन्टर

सरकारी ट्युबवेल के पास, बोपल, अहमदाबाद-380 058 गुजरात

फोन: 02717-235994 / 235995

ई:मेल: dsc@dscindia.org; वेबसाईट: www.dscindia.org